प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

पृथ्वी का सौन्दर्य अतुलनीय है। अन्तर-परिदृश्य इन्द्रियातीत है। व्यक्ति का मन जिस भाँति प्रवहमान है, उड़ान भरता है और गोता लगाता है वह बेजोड़ है। तथापि जो कुछ भी भव्यतम प्रतीत होता है, जो भी सर्वोत्कृष्ट तरीक़े से किया जाता है उसमें एक चीज़ स्पष्ट रूप से अपरिहार्य है—और यह वह चीज़ है जिसे दिव्य कहलाने का अधिकार है।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।